आरती श्री ऋषि मंडल

ॐ जय ऋषि मंडल यन्त्र-स्वामी जय ऋषि मंडल यन्त्रं,
तुम को सुमरे निशदिन-निशदिन, भागत भव तन्त्रं।।
ॐ जय ऋषि मंडल यन्त्रं ।।१।।

हींकार शुभ मध्य विराजे, गोलाकार मझार स्वामी गोलाकार।
ध्यान करें हम निशदिन-निशदिन, होवे भवदधि पार।। ॐ जय..... ।।२।।
ध्यावे तुम को मन वच तन से, पूर्ण मनोरथ पाय-स्वामी पूर्ण मनोरथ पाय।
रोग शोक सर्पादिक-सर्पादिक, वृश्चिक दूर भगाय।। ॐ जय..... ।।३।।
शाकिनि डाकिनी भूत पिशाचा, नाम से दूर पलाय। स्वामी नाम से दूर पलाय।
निर्धन धन को पावे-पावे, कीरति जग में पाय।। ॐ जय..... ।।४।।
हुई सम्पदा नष्ट जिन्हों की, फिर पाई सुखदाय-स्वामी फिर पाई सुखदाय।
नाचे कूदे गाये-गाये, मन में बहु हर्षाय।। ॐ जय..... ।।५।।
हम ऋषि मंडल की करे आरती, दीपक ले उमगाय। स्वामी दीपक ले उमगाय।
वीर सिन्धु गुरु नावे-नावे, "सूरज" शिवपद पाय।। ॐ जय..... ।।६।।

आरती जिनवाणी माता की

ॐ जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी।
तुमको निशदिन ध्यावत-२, सुरनर मुनि ज्ञानी।। ॐ.....
श्री जिन गिरतैं निकसी, गुरु गौतम वाणी-स्वामी.....
जीवन भ्रम तम नाशन-२, दीपक दरषाणी। ॐ.....
कुमत कुलाचल चूरण वज्र सु सरधानी, स्वामी.....
नव नियोग निक्षेपण-२, देखण दरपाणी। ॐ.....
पातक पंक पखालन, पुण्य परम वाणी-स्वामी.....
मोह महार्णव डूबत-२, तारण नौकाणी। ॐ.....
लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी, स्वामी.....
निज पर भेद दिखावन-२, सूरज किरणानी।। ॐ.....
श्रावक मुनि गण जननी, तुम ही गुण खानी-स्वामी.....
सेवक लख शुभदायक-२, पावन परमाणी। ॐ.....
ॐ जय अम्बे वाणी।